International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-06-2026, Accepted: 15-07-2026, Published: 30-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 52-54

आषाढ़ का एक दिन की मल्लिकाः त्याग, विरह और आत्मसम्मान की त्रासदी

डॉ0 सुरभि श्रीवास्तव
अध्यक्ष, परीक्षा नियंत्रक, हिन्दी विभाग, सरस्वती उच्च शिक्षा एवं तकनीकी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12200

सारांश
साठोत्तर हिन्दी नाटकों की परंपरा में मोहन राकेश के नाटक ''आशाढ़ का एक दिन'' का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेम, समर्पण, त्याग, विरह, विद्रोह आदि के धरातल को स्पर्श करती हुई यह नाट्यकृति आधुनिक हिंदी नाटक की प्रतिनिधि कृति और मील का पत्थर है। नाटक की नायिका मल्लिका भारतीय नारी के उस व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है जो प्रेम में समर्पित होने के साथ ही आत्मसम्मान और आत्मचेतना का प्रतीक है। मल्लिका केवल कालिदास की प्रेयसी नहीं है बल्कि भारतीय स्त्री के त्याग, समर्पण, आत्मसम्मान और अन्तर्द्वन्द्व का सशक्त प्रतीक है। प्रस्तुत भोध आलेख का उद्देश्य मल्लिका की पीड़ा के विविध रूपों जैसे– प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक अभाव, स्त्री अस्मिता आदि का स्त्री विमर्श और मानवीय संवेदना के आलोक में विश्लेशण करना है। ''आषाढ़ का एक दिन'' केवल प्रेम–कथा नहीं, बल्कि आधुनिक स्त्री–चेतना और मानवीय संवेदना का महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है।

शोध का उद्देश्य
- आषाढ़ का एक दिन में मल्लिका के चरित्र का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- मल्लिका की पीड़ा के विविध आयामों– प्रेम, विरह, प्रतीक्षा, त्याग, सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक विवशता तथा आत्मसम्मान का विश्लेषण करना।
- मल्लिका के चरित्र में निहित स्त्री–अस्मिता, आत्मचेतना एवं अस्तित्व–बोध की पहचान करना।
- यह प्रतिपादित करना कि मल्लिका का चरित्र आधुनिक हिन्दी नाटक में स्त्री की गरिमा, संवेदनशीलता और आत्मसम्मान का सशक्त प्रतीक है। आदि।

शोध पद्धति
प्रस्तुत शोध गुणात्मक प्रकृति का है तथा इसमें मुख्यतः विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का प्रमुख आधार मोहन राकेश के नाटक आषाढ़ का एक दिन का गहन पाठ है। इसके साथ ही विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध–ग्रंथों, शोध–पत्रों तथा समीक्षात्मक साहित्य का भी सहायक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है।

मूल शब्दः मल्लिका, पीड़ा, स्त्री–अस्मिता, प्रेम, त्याग, विरह, स्त्री–विमर्श, अस्तित्व–बोध, आधुनिक हिन्दी नाटक आदि

आधुनिक हिन्दी नाटक के विकास में मोहन राकेश का महत्वपूर्ण योगदान है। आषाढ़ का एक दिन ने हिन्दी रंगमंच को नई दिशा प्रदान की। इस नाटक का कथानक महाकवि कालिदास के जीवन से प्रेरित है, परन्तु इसका वास्तविक केन्द्र मल्लिका का जीवन–संघर्ष है। मल्लिका का चरित्र प्रेम, त्याग और आत्मसम्मान की त्रिवेणी है। वह अपने प्रिय के उत्कर्ष की कामना करती है, किंतु अंततः उसी की सफलता उसके जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा बन जाती है। नाटक में मल्लिका की संवेदनाएँ आधुनिक मनुष्य की अकेलेपन और विडम्बना को भी अभिव्यक्त करती हैं।

हिन्दी नाटक के इतिहास में आधुनिकता का सशक्त सूत्रपात जिन रचनाकारों ने किया, उनमें मोहन राकेश का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने हिन्दी नाट्य साहित्य को पारंपरिक ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथानकों की सीमाओं से बाहर निकालकर आधुनिक मनुष्य की संवेदना, अस्तित्वगत संकट, संबंधों की जटिलता और मनोवैज्ञानिक यथार्थ से जोड़ा। उनके नाटकों में व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व, सामाजिक विघटन, प्रेम, अकेलेपन और आत्मसंघर्ष का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। आषाढ़ का एक दिन (1958) उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति है, जिसने हिन्दी रंगमंच और नाट्य साहित्य को नई दिशा प्रदान की। यह नाटक इतिहास का पुनर्निर्माण नहीं, बल्कि इतिहास के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की संवेदनाओं का कलात्मक पुनर्सृजन है।

नाटक का आधार महाकवि कालिदास के जीवन से जुड़ा एक कल्पित प्रसंग है, किन्तु इसका वास्तविक केन्द्र कालिदास नहीं, बल्कि मल्लिका का व्यक्तित्व है। मल्लिका वह स्त्री है जो प्रेम में पूर्ण समर्पित है, परंतु आत्मसम्मान से कभी समझौता नहीं करती। वह कालिदास की प्रतिभा को पहचानती है और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वयं के सुख का त्याग कर देती है। यही त्याग उसके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना बन जाता है। कालिदास राजवैभव, प्रतिष्ठा और यश के शिखर पर पहुँचते हैं, जबकि मल्लिका प्रतीक्षा, स्मृति, अभाव और एकाकीपन के बीच जीवन व्यतीत करती है। इस प्रकार उसकी पीड़ा केवल एक विरहिणी की वेदना नहीं, बल्कि उस स्त्री की त्रासदी है जिसने प्रेम में स्वयं को विसर्जित कर दिया, किन्तु बदले में केवल रिक्तता प्राप्त की।

मल्लिका का चरित्र भारतीय नारी के पारंपरिक आदर्श और आधुनिक स्त्री–चेतना के मध्य एक सेतु का कार्य करता है। उसमें त्याग, धैर्य, करुणा और समर्पण जैसे पारंपरिक गुण विद्यमान हैं, वहीं आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और अस्तित्व–बोध जैसी आधुनिक चेतना भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वह किसी भी परिस्थिति में अपने व्यक्तित्व की गरिमा को नष्ट नहीं होने देती। कालिदास के लौट आने पर भी वह उनके साथ जाने का निर्णय नहीं लेती, क्योंकि उसके लिए आत्मसम्मान प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण है। यही विशेषता मल्लिका को हिन्दी नाटक की अन्य नायिकाओं से अलग और अधिक प्रभावशाली बनाती है।

आधुनिक साहित्य में स्त्री–विमर्श ने यह स्थापित किया है कि स्त्री का जीवन केवल उसके संबंधों से नहीं, बल्कि उसकी स्वतंत्र पहचान, अनुभवों और आत्मनिर्णय से भी निर्मित होता है। इस दृष्टि से मल्लिका का चरित्र अत्यंत प्रासंगिक है। उसकी पीड़ा

केवल व्यक्तिगत नहीं है, वह सामाजिक संरचना, लैंगिक असमानता, भावनात्मक उपेक्षा और पुरुष–केंद्रित सफलता की अवधारणा पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। उसका मौन किसी कमजोरी का नहीं, बल्कि गहन संवेदनशीलता और आत्मबल का प्रतीक है। यही कारण है कि मल्लिका आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री–अस्मिता की प्रतिनिधि नायिका के रूप में प्रतिष्ठित हुई है।

वर्तमान समय में, जब स्त्री की स्वतंत्रता, समानता और आत्मपहचान पर गंभीर विमर्श हो रहा है, तब आषाढ़ का एक दिन की मल्लिका का पुनर्पाठ और भी अधिक सार्थक हो जाता है। उसकी पीड़ा आज भी उन असंख्य स्त्रियों की पीड़ा का प्रतिनिधित्व करती है जो परिवार, समाज और संबंधों के बीच अपने अस्तित्व, सम्मान और भावनाओं को सुरक्षित रखने का निरंतर प्रयास करती हैं। इसलिए मल्लिका का चरित्र केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य मल्लिका की पीड़ा के विभिन्न आयामों– प्रेम, विरह, त्याग, आत्मसम्मान, सामाजिक विवशता, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व तथा स्त्री–अस्मिता का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। साथ ही यह स्पष्ट करना भी उद्देश्य है कि मोहन राकेश ने मल्लिका के माध्यम से आधुनिक भारतीय स्त्री की संवेदना, संघर्ष और आत्मगौरव को किस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस अध्ययन से यह स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा कि मल्लिका की पीड़ा केवल एक पात्र की निजी व्यथा नहीं, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री–अस्तित्व की व्यापक सांस्कृतिक और मानवीय त्रासदी का प्रतीक है।

मल्लिका की पीड़ा के विविध आयाम

मोहन राकेश के आषाढ़ का एक दिन की नायिका मल्लिका आधुनिक हिन्दी नाट्य–साहित्य का अत्यंत संवेदनशील एवं बहुआयामी चरित्र है। उसकी पीड़ा किसी एक कारण का परिणाम नहीं है, बल्कि प्रेम, विरह, सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक अभाव, अस्तित्वगत संघर्ष तथा आत्मसम्मान जैसे अनेक आयामों से निर्मित है। मल्लिका की पीड़ा उसे केवल करुणा की पात्र नहीं बनाती, बल्कि उसे एक सशक्त, आत्मचेतस और मानवीय मूल्यों से संपन्न स्त्री के रूप में स्थापित करती है।

1. प्रेम और समर्पण की पीड़ा

मल्लिका की सबसे बड़ी पीड़ा उसके निःस्वार्थ प्रेम के कारण उत्पन्न होती है। वह कालिदास से सच्चा प्रेम करती है और इसीलिए वह अपने प्रियतम को सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करते हुए देखना चाहती है। जब कालिदास उज्जयिनी जाने से मना करता है, तब वह उसे वहां जाने के लिए मना लेती है। वह उससे कहती है– यह क्यों नही सोचते कि नयी भूमि तुम्हें यहां से अधिक सम्पन्न और उर्वरा मिलेगी। इस भूमि से तुम जो कुछ ग्रहण कर सकते थे, कर चुके हो। तुम्हें आज नयी भूमि की आव यकता है, जो तुम्हारे व्यक्तित्व को अधिक पूर्ण बना दे। (राके ा मोहन, आशाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृश्ठ संख्या– 45) यद्यपि वह जानती है कि कालिदास के जाने के बाद उसके जीवन में एकरसता आ जायेगी। वह अपनी माँ से कहती है– मुझे यहीं रहने दो माँ! मैं अस्वस्थ नहीं हूँ। देखो माँ चारों ओर कितने गहरे मेघ घिरे हुए हैं। कल ये मेघ उज्जयिनी की ओर उड़ जायेंगे। (पुनः हाथों में मुँह छिपाकर सिसक उठती है।) (राके ा मोहन, आशाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृश्ठ संख्या– 48)

2. विरह और प्रतीक्षा की पीड़ा

कालिदास के उत्थान की कामना से उसे उज्जयिनी भेज देने के बाद मल्लिका के जीवन में प्रतीक्षा ही भोश बचती है। उसे उम्मीद है कि एक दिन उसका प्रिय लौटकर आयेगा और उसके जीवन में पुनः खुशियाँ लौट आयेंगी। मोहन राकेश ने इस प्रतीक्षा को अत्यन्त सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक संवेदना के साथ चित्रित किया है। मल्लिका का मौन उसके अंतहीन विरह का सबसे प्रभावशाली प्रतीक बन जाता है।

3. उपेक्षा और भावनात्मक विडम्बना की पीड़ा

कालिदास का जीवन जैसे–जैसे समृद्ध होता चला जाता है वैसे–वैसे मल्लिका स्मृतियों और अकेलेपन में सिमटती चली जाती है। यह उपेक्षा केवल प्रेमिका की उपेक्षा नहीं है बल्कि उस स्त्री की उपेक्षा है जिसने किसी व्यक्ति की सफलता की नींव रखी हो। यही भावनात्मक विडम्बना मल्लिका की पीड़ा को और अधिक गहरा बना देती है। कालिदास जब अपने गाँव आता है और मल्लिका से मिले बिना चला जाता है तब वे उस उपेक्षा से दुःखी होकर विलाप करती है। अपनी माँ के उलाहना देने पर वह कहती है– उनके सम्बन्ध में कुछ मत कहो माँ, कुछ मत कहो.....! (सिसकने लगती है।) (राकेश मोहन, आशाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृश्ठ संख्या– 86)

4. सामाजिक और आर्थिक विवशता

मल्लिका का जीवन आर्थिक अभाव और सामाजिक सीमाओं से भी प्रभावित है। वह ग्रामीण परिवेश में अपनी माता अंबिका के साथ संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करती है। सीमित संसाधन, असुरक्षित भविष्य और सामाजिक दबाव उसके जीवन को निरंतर कठिन बनाते हैं। दूसरी ओर कालिदास राजदरबार में सम्मान और समृद्धि प्राप्त करते हैं। यह विरोधाभास तत्कालीन समाज में स्त्री और पुरुष के अवसरों की असमानता को भी उजागर करता है।

5. आत्मसम्मान और स्वाभिमान की पीड़ा

मल्लिका का सबसे सशक्त गुण उसका आत्मसम्मान है। जब कालिदास अंततः लौटते हैं, तब वह उनके साथ जाने से इंकार कर देती है। यह निर्णय उसके मन में प्रेम की कमी के कारण नहीं, बल्कि आत्मगौरव के कारण है। वह यह स्वीकार नहीं करती कि आवश्यकता पड़ने पर ही उसे स्मरण किया जाए। उसका यह मौन प्रतिरोध आधुनिक स्त्री–चेतना का परिचायक है। प्रेम की असफलता के बावजूद वह अपने व्यक्तित्व की गरिमा बनाए रखती है। प्रियंगुमंजरी द्वारा उसके जर्जर घर की परिसंस्कार कराने की बात को भी वे अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए टाल देती है– ...देख रहीं हूँ, तुम्हारा घर बहुत जर्जर स्थिति में है। इसका परिसंस्कार आव यक है। चाहो तो मैं इस कार्य के लिए आदेश दे जाऊँगी। उज्जयिनी के दो कुशल स्थपति हमारे साथ आये हैं। क्यों?

मल्लिका– आप बहुत उदार हैं। परन्तु हमें ऐसे ही घर में रहने का अभ्यास है। इसलिए असुविधा नहीं होती। (राकेश मोहन, आशाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृश्ठ संख्या– 71)

6. अस्तित्वगत संघर्ष की पीड़ा

मल्लिका केवल किसी महान कवि की प्रेमिका नहीं है, वह स्वयं एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है। उसका संघर्ष अपने अस्तित्व और पहचान को बनाए रखने का संघर्ष है। वह परिस्थितियों से टूटती नहीं, बल्कि उन्हें स्वीकार करते हुए अपने जीवन का अर्थ खोजती है। यही कारण है कि उसकी पीड़ा व्यक्तिगत अनुभव से आगे बढ़कर अस्तित्ववादी प्रश्नों को जन्म देती है– क्या प्रेम व्यक्ति के संपूर्ण अस्तित्व का आधार है, अथवा आत्मसम्मान और स्वतंत्रता उससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं?

7. स्त्री–अस्मिता की पीड़ा

मल्लिका की पीड़ा स्त्री–अस्मिता से भी जुड़ी हुई है। उसने अपने प्रेम, श्रम और भावनाओं से कालिदास के व्यक्तित्व को आकार दिया, परंतु इतिहास में उसका योगदान लगभग अदृश्य रह जाता है। यह स्थिति उस सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत करती है जहाँ स्त्री का योगदान प्रायः पुरुष की उपलब्धियों के पीछे छिप

जाता है। इस दृष्टि से मल्लिका केवल एक पात्र नहीं, बल्कि उन असंख्य स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जिनके त्याग को उचित मान्यता नहीं मिलती।

8. मनोवैज्ञानिक पीड़ा

मल्लिका का चरित्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत गहन है। वह अपने दुःख का प्रदर्शन नहीं करती, बल्कि उसे अपने भीतर संजोए रखती है। उसके संवादों में संयम, मौन और संवेदना का अद्‌भुत संतुलन दिखाई देता है। वह टूटती है, किंतु बिखरती नहीं, रोती है, किंतु करुणा की याचना नहीं करती। यही आंतरिक संघर्ष उसके चरित्र को कालजयी बनाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आषाढ़ का एक दिन की मल्लिका केवल एक प्रेमिका नहीं, बल्कि भारतीय स्त्री की गरिमा, त्याग, आत्मसम्मान और संघर्ष का जीवंत प्रतीक है। उसकी पीड़ा व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाती है। मोहन राकेश ने मल्लिका के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि प्रेम का वास्तविक अर्थ अधिकार नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और समर्पण है। मल्लिका का मौन, उसका त्याग और उसका स्वाभिमान आज भी स्त्री–विमर्श तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के अध्ययन में समान रूप से प्रासंगिक हैं। स्पष्ट है कि मल्लिका की पीड़ा बहुआयामी है। उसमें प्रेम की वेदना, विरह की तपस्या, सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक अभाव, आत्मसम्मान का संघर्ष, अस्तित्व की खोज और स्त्री–अस्मिता का प्रश्न एक साथ उपस्थित हैं। मोहन राकेश ने मल्लिका के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि स्त्री की महानता केवल उसके त्याग में नहीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय और मानवीय गरिमा में निहित है। इसलिए मल्लिका आधुनिक हिन्दी नाटक की एक ऐसी नायिका है जिसकी पीड़ा आज भी सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और स्त्री–विमर्श के संदर्भ में उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी। इस दृष्टि से मल्लिका हिन्दी नाट्य साहित्य की सबसे प्रभावशाली और अविस्मरणीय नायिकाओं में से एक है।

संदर्भ सूची

1. राकेश, मोहन। आषाढ़ का एक दिन। राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
2. बच्चन सिंह। आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. नगेन्द्र। हिन्दी साहित्य का इतिहास।
4. रामविलास शर्मा। नई कविता और अस्तित्ववाद।
5. मल्लिका एवं अंबिका के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित समकालीन अध्ययन।